इकाई 15 धर्म और आर्थिकी

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 धर्म और आर्थिकी के अर्थ तथा उनके परस्पर संबंध

- 15.2.1 धर्म
- 15.2.2 आर्थिकी
- 15.2.3 धार्मिक नैतिकता तथा आर्थिकी की बीच परस्पर संबंध
- 15.2.4 कल्विन धर्म को मानने वालों के विश्वास

15.3 प्रोटेस्टेंट नैतिकता तथा पूंजीवाद की प्रवृत्ति

- 15.3.1 पूंजीवाद की प्रवृत्ति
- 15.3.2 प्रोटेस्टेंट नैतिकता: पूंजीवाद के विकास को प्रभावित करने वाली विशेषताएं
- 15.3.3 कल्विनवाद की मुख्य विशेषताएं
- 15.3.4 कल्विन धर्म को मानने वालों के विश्वास

15.4 धर्म के संबंध में वेबर का तुलनात्मक अध्ययन

- 15.4.1 चीन में कन्फ्यूशसवाद
- 15.4.2 पश्चिम एशिया में यहूदी धर्म
- 15.4.3 भारत में हिन्दू धर्म

15.5 वेबर के धर्म तथा आर्थिकी संबंधी अध्ययनों का समालोचनात्मक मूलयांकन

15.6 सारांश

15.7 शब्दावली

15.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

15.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपके लिए संभव होगा

- धर्म तथा आर्थिकी के अर्थ तथा उनके परस्पर संबंधों का विवेचन करना
- वेबर द्वारा चर्चित आधुनिक पूंजीवाद के विकास पर प्रोटेस्टेंट नैतिकता के प्रभावों की व्याख्या करना
- विश्व के तीन धर्मों, चीन में कन्फ्यूशसवाद, पश्चिम एशिया में यहूदी धर्म तथा भारत में हिन्दू धर्म के बारे में वेबर प्रस्तुत तुलनात्मक अध्ययनों की समीक्षा
- धर्म तथा आर्थिकी पर मैक्स वेबर के अध्ययनों का मूल्यांकन करना।

15.1 प्रस्तावना

पूर्ववर्ती इकाई में आपने वेबर द्वारा प्रतिपादित आदर्श प्ररूप की अवधारणा का अध्ययन किया। इस इकाई में वेबर के धर्म तथा आर्थिकी अथवा अर्थव्यवस्था संबंधी विश्लेषण में आदर्श प्ररूप के विचार को प्रयुक्त करके दिखाया गया है।

इस इकाई के प्रारंभ में भाग 15.2 में आपको धर्म तथा आर्थिकी अथवा अर्थव्यवस्था नामक

शब्दों के अर्थ स्पष्ट होंगे। फिर धार्मिक विश्वासों तथा आर्थिक क्रियाकलाप के बीच पारस्परिक संबंधों की जांच का आपको अवसर मिलेगा।

इनके बीच परस्पर संबंधों को स्पष्ट करने के लिए भाग 15.3 में मैक्स वेबर की प्रसिद्ध पुस्तक *द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज़्म* में दिए गए प्रमुख तर्क का विवेचन किया गया है। आपको यह स्पष्ट होगा कि पूंजीवाद की प्रवृत्ति से वेबर का क्या अभिप्राय था और यह परंपरावाद से कैसे भिन्न थी। इसके बाद "प्रोटेस्टेंट नैतिकता" के कुछ पहलुओं पर चर्चा होगी, वेबर के अनुसार प्रोटेस्टेंट नैतिकता ने पश्चिमी दुनिया में पूंजीवाद के विकास में काफी योगदान किया था।

भाग 15.4 में वेबर द्वारा प्रस्तुत तीन धर्मों चीन में कन्फ्यूशसवाद, प्राचीन पश्चिम एशिया में यहूदी धर्म तथा भारत में हिन्दू धर्म के तुलनात्मक अध्ययनों का वर्णन किया गया है। अंत में भाग 15.5 में आपको अर्थव्यवस्था तथा धर्म के बारे में वेबर के विचारों का मूल्यांकन करने का अवसर मिलेगा।

15.2 धर्म और आर्थिकी के अर्थ तथा उनके परस्पर संबंध

इस भाग में आप धर्म तथा आर्थिकी के अर्थ की संक्षेप में चर्चा को पढ़िये। इन दोनों शब्दों के अर्थ जानने के बाद आप अगले भाग में धर्म तथा आर्थिकी के बीच संबंध के बारे में वेबर द्वारा प्रतिपादित प्रारंभिक विचारों का विवेचन करें।

15.2.1 धर्म

धर्म शब्द से तात्पर्य "अलौकिक" शक्तियों के बारे में विचारों तथा विश्वासों के एक समुच्चय तथा उसे मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव से है। मानव के समक्ष हमेशा से कुछ ऐसी समस्याएं और संकट आते रहे हैं जिनका कोई तार्किक समाधान नहीं किया जा सका है।

ऐसा क्यों होता है कि जो हमें प्रिय होते हैं उनकी मृत्यु हो जाती है? ऐसा क्यों होता है कि एक अच्छा व्यक्ति तकलीफ़ उठाता है और बुरा व्यक्ति फलता-फूलता है? प्राकृतिक आपदाएं क्यों आती हैं? इन कठिन प्रश्नों का समाधान उन धार्मिक विश्वासों में मिलता है जो इसका "अलौकिक" या "दैवी" उत्तर प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए मानव जीवन के दुःखों का कारण यह बताया जाता है कि यह मनुष्य के विश्वास की परीक्षा करने का "दैवी ढंग" होता है या फिर ये पूर्व जन्म के पापों का दंड होता है। धार्मिक विश्वास जीवन को एक अर्थ प्रदान करते हैं। ये लोगों को उनके तथा उस दुनिया के अस्तित्व के बारे में जिज्ञासाओं का समाधान देते हैं, जिसमें उनका जीवन बीतता है ये विश्वास लोगों के लिए आचार व्यवहार के नियमित निर्देश व्यवस्थित करते हैं जिन पर चलने की उनसे अपेक्षा की जाती है।

15.2.2 आर्थिकी

आर्थिकी से क्या तात्पर्य है? समाज से अस्तित्व के लिए कुछ बुनियादी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होना ज़रूरी होता है। खाना, कपड़ा और आवास जीवन की अनिवार्य ज़रूरतें हैं। आर्थिकी या अर्थव्यवस्था का संबंध हमारे समाज द्वारा बनाई गई वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन, उपभोग तथा वितरण से संबंधित प्रबंधों से होता है।

क्या उत्पादित किया जाना है? कितना उत्पादित किया जाना है? ज़रूरतमंदों को वस्तुएं किस प्रकार उपलब्ध कराई जाएं? काम का विभाजन कैसे किया जाए? ये कुछ ऐसे विषय हैं जिनका संबंध अर्थव्यवस्था से होता है।

15.2.3 धार्मिक नैतिकता तथा आर्थिकी के बीच परस्पर संबंध

अभी आपने धर्म और आर्थिकी का संक्षेप में तात्पर्य पढ़ा है। ऊपर से देखने में ये दोनों एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न लगते हैं। धर्म का संबंध पारलौकिक से है तो आर्थिकी का संबंध कार्य करने, उत्पादन करने और उपभोग करने के व्यावहारिक कार्य-व्यापार से होता है। एक दूसरे से भिन्न दिखाई देने वाली इन दोनों व्यवस्थाओं के बीच क्या कोई संबंध होता है?

मैक्स वेबर के अनुसार इन दोनों के बीच आपसी संबंध होता है। उसके मतानुसार मानव समाज के विचार, विश्वास, मूल्य तथा विश्व के प्रति दृष्टिकोण ही उनके सदस्यों के कार्यकलापों और यहां तक कि उनके आर्थिक क्षेत्र के कार्यकलापों का दिशा-निर्देश करते हैं। जैसा आपने पहले पढ़ा है, धर्म मनुष्य के आचार-व्यवहार के लिए कुछ दिशा-निर्देश निर्धारित करता है। इन दिशा-निर्देशों के अनुसार ही धर्मावलम्बी अपने कार्यकलापों को निदेशित या निरूपित करते हैं। ये दिशा-निर्देश प्रत्येक धार्मिक पद्धति के धार्मिक नैतिक मूल्यों में समाहित होते हैं (नैतिकता पर स्पष्टीकरण हेतु कोष्ठक 15.1 देखें)।

कोष्ठक 15.1

नैतिकता (Ethic)

नैतिकता केवल धर्म तक ही सीमित नहीं होती, यहां व्यावसायिक नैतिकता, राजनीतिक नैतिकता तथा इसी प्रकार की अन्य नैतिकता का उल्लेख किया जा सकता है। नैतिकता का सामाजिक संरचना के साथ संबंध होता है, क्योंकि इसका समाज के सदस्यों के सामाजिक आचार-व्यवहार के कुछ ऐसे मानक निर्धारित करती है जो वास्तविक व्यवहार के मूल्यांकन करने या उन्हें जांचने में पुयक्त किए जाते हैं। दूसरे शब्दों में नैतिक नियम "क्या करना चाहिए" के द्योतक होते हैं। वे उन सामाजिक समूहों के विशेष मूल्यों तथा विश्वासों को प्रकट करते हैं, जिनसे वे निरूपित होते हैं।

आइए, वेबर के विचारों को अपने समाज से एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करें।

यदि कोई स्वास्थ्य विशेषज्ञ यह सुझाव दे कि यदि भारत के लोग गाय का मांस खाने लगें तो भूख तथा कुपोषण की समस्या कम की जा सकती है। किन्तु गौवध का मात्र विचार ही अधिकांश हिंदुओं के लिए घृणा करने योग्य है और इसे पूरी तरह अस्वीकार कर दिया जाएगा। इसलिए गौवध चाहे आर्थिक दृष्टि से तार्किक या युक्तिपूर्ण लगे किन्तु समाज के मूल्य तथा विचार (इस संदर्भ में यह विचार कि गाय को पवित्र माना जाता है) कुछ निर्णयों पर निश्चिततः अपना प्रभाव डालते हैं। हमारे विश्वास और मूल्य ही हमारे व्यवहार का रूप निर्धारण करते हैं।

धार्मिक विश्वासों तथा आर्थिक व्यवहार के बीच इसी संबंध को वेबर ने अपनी कृतियों में उजागर करने की कोशिश की। उसके अनुसार प्रोटेस्टेंट धर्म तथा पूंजीवाद के नाम से विख्यात आर्थिक व्यवस्था के बीच कुछ अनुरूपताएं या समानताएं विद्यमान थीं। वेबर ने कहा कि इन्हीं समानताओं ने पश्चिमी जगत में पूंजीवाद के विकास में सहायता दी।

बोध प्रश्न 1

i) "धर्म" से आपका क्या तात्पर्य है? चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

ii) धर्म के दो प्रकार्य बताइए। दो पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

iii) धार्मिक विश्वास आर्थिक व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं? दो पंक्तियों में बताइए।

.....

.....

15.3 प्रोटेस्टेंट नैतिकता तथा पूंजीवाद की प्रवृत्ति

वेबर ने प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूंजीवाद की प्रवृत्ति के बीच एक सकारात्मक संबंध स्थापित किया है। वेबर के अनुसार पाश्चात्य पूंजीवाद ने जो स्वरूप लिया, वह प्रोटेस्टेंट नैतिकता की व्यवस्था पर आधारित था। वेबर का यह मत था कि प्रोटेस्टेंट नैतिकता का पूंजीवाद की प्रवृत्ति से घनिष्ठ संबंध है। इस संबंध को दर्शाने के लिए वेबर ने प्रोटेस्टेंट नैतिकता की प्रवृत्ति के आदर्श प्ररूप निर्मित किए। आइए, अब हम देखें कि वेबर का पूंजीवाद की प्रवृत्ति से क्या अभिप्राय है।

15.3.1 पूंजीवाद की प्रवृत्ति

लोग काम क्यों करते हैं? हममे से अधिकांश का उत्तर होगा "पैसा कमाने के लिए।" धन इसलिए कमाया जाता है कि हम और हमारा परिवार खाना खा सके, कपड़े पहन सके और सिर ढकने के लिए मकान बना सके। धन इसलिए भी कमाया जाता है कि हमें कुछ ऐसी आरामदायक और विलासिता की वस्तुओं का उपभोग उपलब्ध हो ताकि जिंदगी खुशहाल बने।

सम्पत्ति या लाभ अर्जित करने की इच्छा उतनी ही पुरानी है जितना कि मानव जाति का इतिहास। सम्पत्ति हमेशा से ही शक्ति, प्रस्थिति तथा प्रतिष्ठा का प्रतीक मानी जाती रही है। लेकिन मानव इतिहास में पहले कभी भी संपत्ति की इच्छा ऐसा संगठित तथा व्यवस्थित रूप धारण नहीं कर सकी जैसा कि उसने आधुनिक या तार्किक पूंजीवाद में ग्रहण किया है। वेबर इसी तार्किक पूंजीवाद का अध्ययन करना चाहता था। उसने पूर्वकालिक पारंपरिक या जोखिम भरे पूंजीवाद तथा आधुनिक काल के तार्किक पूंजीवाद के बीच भेद किया (देखिए कोष्ठक 15.2)।

कोष्ठक 15.2

पारंपरिक पूंजीवाद तथा तार्किक पूंजीवाद

पारंपरिक पूंजीवाद बहुत से कालों तथा स्थानों में विद्यमान रहा है। इस तरह के व्यापार में पूंजीपति को अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है अर्थात् उसको व्यापार में पर्याप्त लाभ की पूरी निश्चितता नहीं होती है। दूसरे शब्दों में कहें कि उसे जोखिम उठाना पड़ता है। विशेष रूप से यह इटली के शहरों में स्पष्ट रूप से विद्यमान था। पारंपरिक पूंजीवाद एक जोखिमी व्यवसाय था, जिसमें दूरस्थ स्थानों से विलासिता की वस्तुओं का आयात करना शामिल होता था। विदेशी रेशम, मसाले, हाथी दांत की वस्तुओं आदि को बढ़ी-चढ़ी कीमतों पर ग्राहकों को बेचा जाता था। इसका उद्देश्य

यह होता था कि यथा संभव ज़्यादा से ज़्यादा मुनाफा कमा लिया जाए, क्योंकि कोई नहीं जानता था कि अगला सौदा कब और कहां हो पाएगा। इस तरह यह एक ही झटके में सौदा करने की कड़ी के रूप में होता था। दूसरी ओर तार्किक पूंजीवाद वस्तुओं के बहुत बड़े पैमाने पर उत्पादन और वितरण पर आधारित होता है। औद्योगिक क्रांति तथा कारखाना उत्पादन प्रणाली के कारण ऐसा करना संभव हो गया। ध्यान देने योग्य बात यह है कि तार्किक पूंजीवाद के अंतर्गत केवल कुछ विलासिता की वस्तुओं का ही व्यापार नहीं किया जाता अपितु इसमें रोज़मर्रा की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली लगभग सभी वस्तुओं जैसे रोटी (bread) से लेकर कपड़ा और कार तक का व्यापार किया जाता है। तार्किक पूंजीवाद का लगातार विस्तार हो रहा है, इसमें नई विधियों, नए आविष्कारों, नए उत्पादों तथा नए उपभोक्ता वर्गों का समावेश हो रहा है। व्यवस्थित रूप से कार्य होने और नियमित सौदे होने की वजह से इस प्रकार का पूंजीवाद पारंपरिक पूंजीवाद की तुलना में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों ही रूपों में भिन्न है।

वेबर के अनुसार पूंजीपति संपत्ति की इच्छा सुखी या विलासी जिंदगी बिताने के लिए नहीं अपितु उसके माध्यम से और अधिक संपत्ति अर्जित करने के लिए करते थे। धन की खातिर धन अर्जित करने की यह प्रबल इच्छा ही आधुनिक पूंजीवाद का सार-तत्व है। पूंजीवाद एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जिसका लक्ष्य उत्पादन के तर्कपूर्ण संगठन के माध्यम से असीमित लाभ संचित करना होता है।

पूंजीवाद इंग्लैंड तथा जर्मनी जैसे पश्चिमी देशों में उभरा जहां औद्योगिक क्रांति हो चुकी थी। इन देशों में कारखाना प्रणाली के विकास, उत्पादन की नई तकनीकों की खोज, नए-नए औज़ारों और मशीनों के प्रयोग ने पूंजीपतियों तथा मालिकों को असीम मात्रा में धन कमाना संभव कर दिया। इसके लिए उत्पादन की प्रक्रिया को तार्किक दृष्टि से संगठित किया जाना ज़रूरी था अर्थात् दूसरे शब्दों में दक्षता तथा अनुशासन लागू करना अनिवार्य था।

श्रमिक एक साध्य का साधन मात्र बन गया और साध्य लाभ हो गया। काम के प्रति अभिवृति यह हो गई कि काम को ठीक तरह से केवल इसलिए नहीं किया जाना है कि व्यक्ति को काम करना ही चाहिए, अपितु इसलिए किया जाना है कि उसके साथ अंतर्भूत पारिश्रमिक जुड़ा है। प्रसिद्ध अमरीकी कहावत "कोई भी काम जो करने लायक है वह अच्छी तरह करने लायक होता है" इस अभिवृति की परिचायक है। कड़ी मेहनत के साथ तथा दक्षता के साथ काम करना स्वयं में एक साक्ष्य बन गया।

वेबर ने इस कार्य-नैतिकता और परंपरावाद के बीच अंतर को दर्शाया।

परंपरागत समाज में श्रमिक को अधिक वेतन की अपेक्षा कम काम तथा मेहनत की बजाय आराम को अधिक पसंद था। वे नई कार्य-विधियों तथा तकनीकों को अपनाने में अक्षम थे या अनिच्छुक थे।

जैसा पहले कहा जा चुका है, पूंजीवाद में पूंजीपति श्रमिक को साध्य का एक साधन ही मानता है। लेकिन परंपरावाद के अंतर्गत श्रमिक और पूंजीपति के बीच संबंध अनौपचारिक, प्रत्यक्ष और वैयक्तिक थे।

परंपरावाद पूंजीवाद के विकास में बाधक होता है। पूंजीवाद के अंतर्गत व्यक्तिवाद, नए-नए आविष्कार तथा लाभ कमाने की अनथक चेष्टा को अधिक महत्व दिया जाता है। लेकिन परंपरावाद, जैसा कि ऊपर कहा गया है, उत्पादन की अपेक्षाकृत कम अनुशासित

तथा कम दक्ष प्रणाली पर आधारित होता है। दूसरी ओर, पूंजीवाद की प्रवृत्ति एक ऐसी कार्य-नैतिकता पर आधारित होती है जिसका उद्देश्य संपत्ति के लिए **पूंजी संचयन** करना होता है। ऐसा करने के लिए कार्य को एक दक्षतापूर्ण, अनुशासित ढंग से संगठित करना होता है। मेहनत के साथ काम करना एक ऐसा गुण होता है जिसके साथ अन्तर्भूत पारिश्रमिक जुड़ा होता है।

परंपरावाद के विपरीत पूंजीवाद की प्रवृत्ति में व्यक्तिवाद अभिनव प्रयोग, मेहनत तथा संपत्ति के लिए ही संपत्ति संचित करने की चाह की ज़रूरत होती है। इसलिए यह ऐसी आर्थिक नैतिकता है जो पहले की सभी नैतिकताओं से बिल्कुल भिन्न है।

आइए, अब वेबर की "प्रोटेस्टेंट नैतिकता" को समझने की चेष्टा करें अर्थात् प्रोटेस्टेंट धर्म के प्रमुख सिद्धांतों या आदर्शों की चर्चा करें। परंतु इसके पहले ज़रा बोध प्रश्न 2 को पूरा कर लें ताकि अभी तक पढ़े बिंदुओं को दुहराया जा सके।

बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित तीन प्रश्नों के सही उत्तरों पर सही का चिन्ह लगाइये।

i) वेबर के अनुसार पूंजीवाद का सारतत्व क्या है?

क) श्रमिकों का पूंजीपतियों द्वारा शोषण किया जाता है।

ख) पूंजीपतियों का उद्देश्य अपने लाभ को बढ़ाना होता है ताकि वे विलासी जीवन बिता सकें।

ग) **धन कमाना** स्वयं में साध्य हो जाता है।

घ) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर बताइए।

ii) पूंजीवाद तब पैदा हुआ जब पश्चिमी राष्ट्र निम्नलिखित में से किस घटना से होकर गुज़रे?

क) फ्रांसीसी क्रांति

ख) हरित क्रांति

ग) औद्योगिक क्रांति

घ) उपर्युक्त में कोई नहीं

सही उत्तर बताइए।

iii) उत्पादन के "तार्किक संगठन" के लिए क्या आवश्यक हैं?

क) दक्षता, अनुशासन तथा कड़ी मेहनत

ख) श्रमिकों के लिए कम काम और ज़्यादा वेतन

ग) अत्यधिक धनराशि

घ) उपर्युक्त सभी

iv) निम्नलिखित विशेषताओं को कॉलम 'अ' तथा 'ब' के सही शीर्षक के अंतर्गत लिखिए।

	अ	ब
	परंपरावाद	पूंजीवाद
क) मालिक के साथ अनौपचारिक संबंध		
ख) कार्य को साध्य मानकर काम करना		
ग) अभिनव विधियां तथा व्यक्तिवाद		

घ) परिवर्तन का विरोध

ड़) श्रमिक साध्य की पूर्ति के लिए साधन

च) लाभ की असीमित चाह

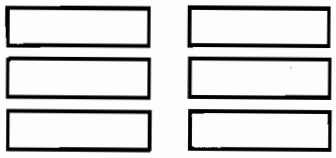

15.3.2 प्रोटेस्टेंट नैतिकताः पूंजीवाद के विकास को प्रभावित करने वाली विशेषताएं

सबसे पहले आइए कुछ ऐतिहासिक ब्यौरों को स्पष्ट करें। प्रोटेस्टेंटवाद क्या है? जैसा कि इसके नाम से मालूम पड़ता है, यह प्रोटेस्ट या विरोध का धर्म है। इसका सोलहवीं सदी में यूरोप में **सुधारवाद** के काल में प्रादुर्भाव हुआ।

इसके प्रवर्तक मार्टिन लूथर तथा जॉन कल्विन ने **कैथोलिक चर्च** के साथ संबंध विच्छेद कर लिया। उन्होंने अनुभव किया कि चर्च रूढ़ सिद्धांतों तथा अनुष्ठानों में उलझ गया था और इसका आम आदमी से संपर्क टूट गया था। लालच, भ्रष्टाचार तथा बुराइयों ने चर्च को जकड़ लिया था। पादरी लोग राजाओं जैसी ज़िंदगी जीने लगे थे। संपूर्ण यूरोप में उभरे प्रोटेस्टेंट पंथों ने चर्च की खोई हुई विचारधारा को पुनः स्थापित करने की चेष्टा की। उन्होंने सादगी, सरलता तथा निष्ठा पर ज़ोर दिया। फ्रांसीसी विद्वान जॉन कल्विन द्वारा सीपित "कल्विनवाद" एक ऐसा ही पंथ था। इंग्लैंड में कल्विन के अनुयायियों को प्यूरिटन (puritan) कहा जाता था। वे उत्तरी अमरीका में चले गए और उन्होंने अमरीकी राष्ट्र की नींव डाली।

वेबर के प्रेक्षण के अनुसार पश्चिम में अधिकांशतः इन प्रोटेस्टेंट मतानुयायियों ने ही शिक्षा तथा रोज़गार के क्षेत्र में सबसे ज़्यादा प्रगति की। वे नौकरशाही के उच्चस्थ पदों पर आसीन हो गए। वे सर्वाधिक कुशल तकनीकी कामगार तथा अग्रणी उद्योगपति बने। क्या उनके धर्म में ऐसी कोई बात थी जिससे प्रेरणा लेकर वे इतनी प्रगति कर सके? वेबर का कुछ ऐसा ही विचार था और उसने इसे सिद्ध करने का प्रयास भी किया। जिस प्रकार के पूंजीवाद में वेबर की सबसे ज़्यादा रूचि थी वह कल्विनवाद से ही प्रेरित था। इसकी मुख्य विशेषताओं की जांच करने पर हमें पता चलेगा कि धर्म तथा अर्थव्यवस्था के बीच कितना गहरा संबंध है।

जैसा कि हमने पहले कहा है, धर्म तथा अर्थव्यवस्था या इस विशेष मामले में पूंजीवाद की प्रवृत्ति तथा कल्विनवाद के बीच संबंध दर्शाने के लिए हमें सबसे पहले कल्विनवाद की मुख्य विशेषताओं का विवेचन करना होगा।

15.3.3 कल्विनवाद की मुख्य विशेषताएं

वेबर के अध्ययन के अनुसार, कल्विनवाद में निम्नलिखित विशेषताएं हैं।

(i) कल्विन द्वारा प्रतिपादित ईश्वर की छवि

कल्विन के अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान, परमोत्कृष्ट है। उसकी दैवी इच्छा अज्ञेय होती है। ईश्वर की इच्छा को समझने की चेष्टा करना मनुष्य की मूर्खता होगी।

(ii) नियति का सिद्धांत

कल्विनवाद का मूलाधार एक विश्वास है कि ईश्वर ने कुछ लोगों को स्वर्ग में प्रवेश के लिए चुन या निर्वाचित कर रखा है और शेष नरकभोगी होते हैं। चुने हुए लोग स्वर्ग अवश्य पहुंचेंगे फिर चाहे वे पृथ्वी पर कुछ भी करें। शेष जन साधारण स्वर्ग में स्थान पाने के लिए प्रार्थना या बलि देकर ईश्वर को लुभा नहीं सकते। यह इच्छा अज्ञेय होती है,

अतः जनसाधारण के लिए इसे बदल सकना संभव नहीं है। इस कठोर धर्म के अनुयायी की असुरक्षा के बारे में कल्पना करके देखिए। उसे नहीं मालुम कि उसे स्वर्ग के लिए चुना गया या नहीं। उसके लिये सांत्वना तथा सहायता हेतु किसी पादरी के पास जाना भी संभव नहीं, क्योंकि उसे मालूम है कि कोई नश्वर प्राणी ईश्वर को समझ ही नहीं सकता। ऐसी स्थिति में अपने अनिश्चित भाग्य के बारे में अपनी चिंता को वह कैसे दूर करे? वह स्वयं को यह कैसे सिद्ध करके दिखाए कि वह चुनें हुए कुछ में से एक हैं?

पृथ्वी पर समृद्ध बनकर ही ऐसा कर पाना उसके लिये संभव है। उसकी भौतिक समृद्धि ही उसके चुनाव का प्रतीक या चिन्ह होगी। उसे ईश्वर की स्तुति के लिए कार्य करना है।

(iii) कल्विनवाद तथा इहलौकिक आत्म संयम

संयम से हमारा तात्पर्य आत्मानुशासन, नियंत्रण तथा इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर लेना होता है। वेबर ने प्रोटेस्टेंटवाद में और विशेष रूप से कल्विनवाद में इहलौकिक आत्म संयम बरतने की प्रवृत्ति पाई। इसके अंतर्गत वातावरण पर नियंत्रण करने के लिए कठोर आत्मानुशासन पर बल दिया गया। सांसारिक या इंद्रिय सुखों को जघन्य माना गया। उनके अनुसार अच्छे कपड़े पहना, नृत्य और संगीत, थियेटर तथा उपन्यास आदि शैतान की उपज है, क्योंकि वे व्यक्ति को ईश्वरीय आराधना के मार्ग से विमुख कर सकते हैं। यहां तक कि हंसने जैसी मानवीय अभिव्यक्ति पर भी अप्रसन्नता प्रकट की गई।

कड़ी मेहनत पर केवल कल्विनवादी ही ज़ोर नहीं देते थे, अपितु इस पर सभी प्रोटेस्टेंट पंथ भी बल देते थे। ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है, यह विचार प्रारंभिक पूंजीवाद का एक सिद्धांत बन गया था। वेबर (1948: 313) ने मैथोडिस्ट पंथ से कुछ उदाहरण दिए हैं, जिनके अनुसार उनके मतावलंबियों के लिए निम्नलिखित काम निषिद्ध बताए गए हैं।

क) किसी वस्तु को बेचते या खरीदते समय मोल भाव करना

ख) आवश्यक कर तथा प्रशुल्क अदा किए बिना वस्तुओं का व्यापार करना

ग) देश के क़ानून द्वारा अनुमत ब्याज दर से अधिक ब्याज वसूल करना

घ) पृथ्वी पर खज़ाना इकट्ठा करना (अर्थात् निवेश पूंजी को "निधिक संपत्ति"के रूप में परिवर्तित करना)

ड) ऋण को वापिस करने की क्षमता सुनिश्चित किए बिना उधार लेना

च) सभी प्रकार के भोग विलास

कड़ी मेहनत के फल को सांसारिक सुखों पर खर्च नहीं किया जा सकता। इसलिए धन न केवल एक ही उपयोग है कि और अधिक धन कमाने के लिए उसका फिर से निवेश कर दिया जाए। एक क्षण भी व्यर्थ बरबाद न किया जाए, क्योंकि "कार्य ही साधना" है और "समय ही धन" है।

(iv) ईश्वरीय आहवान (notion of 'calling')

क्या कोई विश्वविद्यालय का विद्यार्थी सफाई का काम स्वीकार करेगा? शायद नहीं। हममे से अधिकांश लोग सफाई मज़दूर या कूड़ा इकट्ठा करने वाले के काम को बहुत छोटा या बहुत गंदा काम मानते हैं। इसके विपरीत कल्विनवाद की नैतिकता यह कहती है कि सभी काम महत्वपूर्ण तथा पवित्र होते हैं। यह केवल काम नहीं होता अपितु एक ईश्वरीय आहवान या एक मिशन होता है और इसलिए इसे निष्ठा तथा लगन के साथ

संपन्न करना चाहिए। यही विचार चित्र 15.1 पूंजीवाद की मूल भावना में प्रस्तुत किया गया है।

चित्र 15.1: पूँजीवाद की मूल रचना

सोचिए और करिए 1

किसी भी धार्मिक पंथ के बारे में दो पृष्ठ की टिप्पणी लिखिए जिसमें उस पंथ द्वारा प्रतिपादित व्यक्ति के रोज़मर्रा के आचार-व्यवहार के बारे में दिशा-निर्देशों का उल्लेख हो। यदि संभव हो तो अपनी टिप्पणी का अपने अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों के साथ मिलान कीजिए।

15.3.4 कल्विन धर्म को मानने वालों के विश्वास

अब तक आपने देखा कि वेबर ने विश्व के प्रति अध्यात्मिक दृष्टिकोण और आर्थिक कार्यकलाप की एक निश्चित शैली के बीच घनिष्ठ संबंधों का किस प्रकार वर्णन किया है। यह संबंध कल्विन धर्म के अनुयायियों में विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। वेबर ने निष्कर्ष के रूप में उनके बारे में निम्नलिखित पांच बातें कही हैं।

क) उनके अनुसार एक परम श्रेष्ठ ईश्वर विद्यमान है जो सृष्टिकर्ता है और उसका शासन है लेकिन वह सीमित मानव मस्तिष्क के लिए अज्ञेय और अगम्य होता है।

ख) इस सर्वशक्तिमान और रहस्यमय ईश्वर ने हम सबकी मोक्ष या नरकवास के लिए नियति तय कर रखी है। इसलिए अपने कर्म से इस देवी आदेश को बदला नहीं जा सकता, क्योंकि यह तो हमारे जन्म से पहले ही तय किया जा चुका होता है।

ग) ईश्वर ने अपने परमानंद के लिए ही इस विश्व की सृष्टि की है।

घ) चाहे उसे मोक्ष मिले या नरकवास, मनुष्य को ईश्वर के आनंद के लिए काम करना ही पड़ेगा और उसे पृथ्वी पर ईश्वर का साम्राज्य सीपित करना होगा।

ड) भौतिक वस्तुएं, मानव प्रकृति तथा हाड़मांस पाप और मृत्यु की व्यवस्था से संबंधित हैं और मोक्ष उसे दैवी कृपा से ही मिल सकता है। (देखिये आरों 1967: 221-222)

इसकी वजह से ही एक अनुशासित तथा निष्ठावान श्रमबल निर्मित करने में सहायता मिली और इसके अभाव में पूंजीवाद का जन्म ही नहीं हो सकता था। कड़ी मेहनत, बचत तथा पुनःनिवेश और समृद्ध बनने की इच्छा का "पूंजीवाद की प्रवृति" के साथ घनिष्ठ संबंध होता है।

आइए अब उस संबंध पर विचार करें जो वेबर स्थापित करना चाहता था। विचार मानव आचरण पर हावी होते हैं या प्रभाव डालते हैं और मानव आचरण को उसके पीछे काम

कर रहे विचारों के संदर्भ में ही समझा जा सकता है। दिन रात मेहनत करने के बाद भी उस श्रम के फल का उपभोग न करना हममें से कुछ लोगों को अविवेकपूर्ण लग सकता है। लेकिन यदि हम नियति के सिद्धांत और ईश्वर द्वारा चुने जाने को सिद्ध करने के लिए समृद्ध होने की आवश्यकता को ध्यान में रखें तो यह तर्कहीन व्यवहार सार्थक हो जाएगा। जैसा आपने पहले पढ़ा है कि धार्मिक विश्वास कर्म करने के लिए मार्ग निर्देश तय करते हैं, वे हमें एक विशेष ढंग से आचार करने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रोटेस्टेंट नैतिकता तथा पूंजीवाद के बारे में उपरोक्त जानकारी के बाद अब बोध प्रश्न 3 पूरा करने का समय आता है, क्यों न यही किया जाये?

बोध प्रश्न 3

i) मैक्स वेबर प्रोटेस्टेंट नैतिकता तथा पूंजीवाद के बीच संबंध क्यों स्थापित करना चाहता था? चार पंक्तियों में उत्तर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

ii) कल्विनवादी किसी भी काम को "छोटा" क्यों नहीं मानते थे? चार पंक्तियों में उत्तर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

15.4 धर्म के संबंध में वेबर का तुलनात्मक अध्ययन

धार्मिक नैतिकता तथा आर्थिक व्यवहार के बीच वेबर जो संबंध स्थापित करना चाहता था उसके बारे में आपने अभी पढ़ा है। आइए, अब हम देखें कि वेबर ने अपने इस विचार को विश्व के विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन की सहायता से किस तरह प्रमाणित तथा सिद्ध करने की कोशिश है। इस भाग में प्राचीन चीन में कन्फ्यूशसवाद, प्राचीन भारत में हिन्दू धर्म तथा फ़िलिस्तीन (पश्चिम एशिया) में यहूदी धर्म के बारे में वेबर के अध्ययनों की व्याख्या की गई है।

15.4.1 चीन में कन्फ्यूशसवाद

प्राचीन चीन में एक सुविकसित अर्थव्यवस्था विद्यमान थी। उस समय व्यापार, वाणिज्य, वित्त-व्यवस्था तथा विनिर्माण कार्य काफ़ी उन्नत थे। इन भौतिक परिस्थितियों की विद्यमानता के बावजूद वहां पश्चिम शैली का पूंजीवाद तथा **औद्योगिक क्रांति** विकसित नहीं हो पाये। इसका कारण क्या था? वेबर के अनुसार कन्फ्यूशियस मत की नैतिकता ऐसा नहीं होने देती। कन्फ्यूशियस मत के विचारों को संक्षेप में नीचे दिये प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है।

i) विश्व अर्थात् ब्रहमांड की व्यवस्था में विश्वास

ii) मनुष्य का ध्येय प्रकृति तथा विश्व के साथ समरसता बनाए रखना होना चाहिए।

iii) हमारा व्यवहार परंपरा द्वारा निदेशित हो क्योंकि ज्ञान का स्रोत अतीत में ही पाया जाता है

iv) परिवार तथा वंश के साथ संबंधों तथा दायित्वों की कभी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए

समरसता, परंपरावाद तथा पारिवारिक दायित्वों पर बल देना लाभ के लिए लाभ कमाने के अनथक प्रयास से बिल्कुल भिन्न विचार है। वास्तव में इसके अंतर्गत पूंजीवाद की प्रवृत्ति को ही संभवतः ग़लत आचार माना जाता।

15.4.2 पश्चिम एशिया में यहूदी धर्म

यह धर्म यहूदी समुदाय का है जो मूल रूप से पश्चिम एशिया के फ़िलिस्तीन क्षेत्र के निवासी थे। यहूदी धर्म सबसे प्राचीन एकश्वरवादी धर्म है और यह सर्वशक्तिमान तथा सर्वप्रभुत्वधारी एक ईश्वर में विश्वास करता है। यहूदियों का विश्वास है कि वे ईश्वर या "जहोवा" के चुने हुए प्रतिनिधि हैं। उनके पैगम्बर ने उन्हें इस विश्वास के साथ संगठित किया कि वे ईश्वर के चुने हुए प्रतिनिधि हैं और उन्हें पृथ्वी पर ईश्वर का राज्य स्थापित करना है। कन्फ्यूशसवाद और हिंदू धर्म के विपरीत यहूदी धर्म पर्यावरण के साथ समरस होने की नहीं अपितु उस पर विजय प्राप्त करने की बात करता है।

वेबर का कहना है कि यहूदी धर्म पूंजीवाद की प्रवत्ति पैदा कर सकता था। लेकिन कुछ ऐतिहासिक शक्तियों ने उसे ऐसा करने से रोक दिया। अत्याचार के कारण उन्हें अपनी मातृभूमि से **महानिष्क्रमण** या सामूहिक प्रवास करना पड़ा और वे समूचे विश्व में तितर-बितर हो गए। उनकी आर्थिक प्रतिभागिता पैसा उधार देने तक सीमित हो गई और इस कार्य को उन्होंने सफलतापूर्वक संपन्न किया।

15.4.3 भारत में हिन्दू धर्म

भारत में धर्म के संबंध पर चर्चा करते समय वेबर ने हिन्दू धर्म की नैतिकता में तर्कसंगत पूंजीवाद के पनपने की संभावना को नकार दिया। उसके अनुसार भारत जैसे जाति प्रथा-आधारित समाज में आधुनिक पूंजीवाद का संगठन बिल्कुल असंभव है और न ही पश्चिमी दुनिया से आयातित पूंजीवाद यहां फल-फूल सकता है।

चीन की तरह भारत भी आर्थिक दृष्टि से काफ़ी उन्नत था। संभवतः आपको मालूम होगा कि प्राचीन भारत का विज्ञान के क्षेत्र में भी अमूल्य योगदान रहा है। विश्वव्यापी बाज़ार में यहां का विनिर्मित माल बिकता था और विश्व के विभिन्न भागों के साथ भारत के व्यापारिक संबंध स्थापित हो गए थे।

लेकिन वेबर का कहना है कि हिन्दू धर्म पूंजीवाद के विकास के लिए उपयुक्त नैतिकता प्रदान नहीं कर सका। कर्म, धर्म तथा पुनर्जन्म (जन्म तथा पुनर्जन्म का चक्र) के विचारों ने भारतीयों को निराशावादी एवं नियतिवादी बना दिया। आपने लोगों को यह कहते तो सुना ही होगा, "मुझे अपने पिछले जन्म के कर्मों का दण्ड मिल रहा है।" चूंकि वर्तमान स्थिति पिछले कर्मों का परिणाम है अतः वेबर के विचार अनुसार हिन्दू लोग अपनी वर्तमान आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए प्रेरित नहीं होते। वेबर का कहना है कि हिन्दू उस तरह की कड़ी मेहनत करना अभीष्ट नहीं समझते जो पूंजीवाद के लिए ज़रूरी है।

"मोक्ष या मुक्ति" के हिन्दू आदर्श के अनुसार हमारी आत्मा को मुक्ति तभी मिल सकती

है जब हम सांसारिक इच्छाओं या "वासनाओं " का मोह त्याग दें। भौतिक संसार तो एक भ्रम या माया है। हमें सच्चा आनन्द तभी मिलेगा, जब हम "मायाजाल" से मुक्त हो जाएं। हिन्दू धर्म "पारलौकिक संयम" का उपदेश देता है। भौतिक संसार को महत्वहीन माना गया है। भौतिक समृद्धि अस्थायी तथा भ्रमित करने वाली होती है, इसलिए उसको कोई महत्व नहीं दिया जाता है।

अनश्वर आत्मा का कल्याण ही ज़्यादा महत्वपूर्ण है। वे धर्म जो पारलौकिक संयम पर ज़ोर देते हैं और भौतिक संसार को हीन मानते हैं, पूंजीवाद का संवर्धन करने की अभिवृति पैदा नहीं कर सकते।

अतः यह स्पष्ट है कि भौतिक स्थितियां जैसे वित्त, व्यापार तथा प्रौद्योगिकी ही पूंजीवाद के संवर्धन के लिए काफ़ी नहीं है। भारत और चीन दोनों देशों में ये स्थितियां मौजूद थीं, लेकिन इन समाजों की मूल्य व्यवस्थाएं ऐसी थीं कि संपत्ति अर्जन करने की प्रकृति और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए तार्किक संगठन बनाना दोनों का यहां कोई महत्व नहीं था। यह इन समाजों के आदर्शों और नैतिकताओं के अनुरूप नहीं थी।

हिन्दू धर्म पर मैक्स वेबर के विचारों को पढ़ने के बाद उपयुक्त समय है कि आप सोचिये और करिये 2 को पूरा करें।

सोचिए और करिए 2

आपने प्रसिद्ध दूरदर्शन धारावाहिक "महाभारत" देखा होगा। इस धारावाहिक में हिन्दू नैतिकता किस रूप में प्रस्तुत की गई है? यह वेबर द्वारा प्रतिपादित हिन्दू नैतिकता से किस सीमा तक भिन्न या समान है? आप अपने विचार दो पृष्ठों में व्यक्त करिए। यदि संभव हो तो अपने अध्ययन केंद्र में अपनी टिप्पणी की अन्य विद्यार्थियों की टिप्पणियों से तुलना करिए।

15.5 वेबर के धर्म तथा अर्थव्यवस्था संबंधी अध्ययनों का समालोचनात्मक मूल्यांकन

धर्म तथा आर्थिकी संबंधी वेबर के विचारों की अक्सर आलोचना की जाती रही है। कुछ विद्वान यह महसूस करते हैं कि वेबर ने धार्मिक नैतिकता के कुछ पहलुओं को अपनी इच्छानुसार चुनकर उन्हें बड़े संकीर्ण ढंग से इस तरह विवेचित कर दिया है कि वे उसके सिद्धांत के अनुरूप ठीक बैठ जाएं।

उदाहरण के लिए, हिन्दू नैतिकता के अध्ययन में वेबर ने उसके केवल एक पहलू पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया और उसके नियतिवादी तथा निष्क्रिय पहलू को ही बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया। कुछ विद्वानों और अध्येताओं ने यह तर्क दिया है कि कर्म और धर्म की धारणाएं वास्तव में तो व्यक्ति को कार्य करने, अपने कर्त्तव्य का पालन करने और अपने दायित्वों को निभाने के लिए प्रेरित करती है। यह उल्लेखनीय है कि व्यवसाय की अवधारणा जो पूंजीवाद की प्रवृत्ति की आधारशिला है, हिन्दू धर्म में भी प्रचलित है। फल की इच्छा किए बिना अपने कर्त्तव्य का पालन करने का भगवत गीता का सिद्धांत तथा व्यवसाय का सिद्धांत दोनों समान ही हैं। व्यवसाय का सिद्धांत पश्चिमी देशों में ही भौतिक प्रगति का केंद्र बिंदु है। मिल्टन सिंगर ने मद्रास (चेन्नई) शहर के कुछ अग्रणी उद्योगपतियों का अध्ययन किया था और इस अध्ययन में उसने प्रोटेस्टेंट नैतिकता की भारत में प्रकार्यात्मक समानता प्रस्तुत की है। उसके अनुसार जाति की पृष्ठभूमि तथा परंपरा भारत के औद्योगिक विकास में समान रूप से उपयुक्त बैठती है। जाति पर

आधारित श्रम-विभाजन को औद्योगिक श्रमिकों की विशेषज्ञता के क्षेत्र में सफलतापूर्वक प्रयुक्त किया गया है। सिंगर ने देखा कि "विभागीकरण" की प्रक्रिया के ज़रिए बहुत से उद्योगपतियों ने अपने व्यवसायिक दायित्वों तथा आनुष्ठानिक दायित्वों को अलग-अलग यानी बिल्कुल पृथक विभागों में रखा। इसलिए एक ओर व्यक्ति की व्यवसायी के रूप में भूमिका और दूसरी ओर धार्मिक व्यक्ति के रूप में उसकी भूमिका के बीच कोई संघर्ष नहीं पैदा हुआ।

मिल्टन सिंगर के अनुसार यदि भारत में पूंजीवाद को विकसित होना है तो यह पश्चिम की मात्र नक़ल नहीं होनी चाहिए, क्योंकि यह पारंपरिक जीवन शैली को क्षति पहुंचाने वाली है। भारत में पूंजीवाद का विकास सांस्कृतिक प्रतिमानों तथा सामाजिक संस्थानों की परिधि में ही हो सकता है (सिंगर 1977)।

आइए, इस बिंदु पर बोध प्रश्न 4 को पूरा करें।

बोध प्रश्न 4

निम्नलिखित तीनों प्रश्नों के सही उत्तरों पर सही का निशान लगाइये।

i) कन्फ्यूशसवाद निम्नलिखित में से किस पर बल देता है?
   क) व्यक्तिवाद
   ख) विश्व के साथ समरसता
   ग) नियतिवाद तथा निष्क्रियता

ii) वेबर के अनुसार हिन्दू लोग काम करने की ओर नीचे से दिए किस कारण से प्रेरित नहीं होते?
   क) उनके धर्म में उन्हें नियति में विश्वास करने वाला बना दिया है।
   ख) उनकी प्रौद्योगिकी तथा विनिर्माण कार्य काफ़ी अच्छी तरह से विकसित रहे हैं
   ग) वे आलसी होते हैं।

iii) प्राचीन फिलस्तीन में पूंजीवाद नीचे दिए कारणों में से किस कारणवश विकसित नहीं हो पाया?
   क) यहूदी धर्म "पारलौकिक संयम" पर बल देता है।
   ख) यहूदी लोग पूरी दुनिया में छितर गए।
   ग) यहूदी पैंगबरों ने पर्यावरण पर विजय करने का उपदेश दिया।

15.6 सारांश

इस इकाई में सबसे पहले हमने "धर्म" और आर्थिकी की अवधारणाओं को स्पष्ट किया। हमने वेबर द्वारा वर्णित इन दोनों अवधारणाओं के बीच संबंध को देखने का प्रयास किया। हमने पश्चिमी देशों में तार्किक पूंजीवाद के विकास के बारे में वेबर द्वारा प्रस्तुत तर्कों का विवेचन किया। हमने वेबर द्वारा प्रस्तुत उन तर्कों को भी देखा जिनके अनुसार चीन, पश्चिमी एशिया तथा भारत में पूंजीवाद क्यों नहीं विकसित हो पाया। अंत में, हमने भारतीय समाज के संदर्भ में वेबर द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत की कुछ आलोचनाओं पर भी विचार किया।

15.7 शब्दावली

कैथोलिक चर्च इसे रोम का चर्च भी कहा जाता है। इसका मुख्यालय वैटिकन सिटी में है और इस चर्च का प्रमुख पोप होता है। सुधारवाद से पहले यही ईसाई धर्म का मुख्य चर्च था। सुधारवाद के बाद इससे कई अलग पंथ बन गए, जैसे कल्विनवादी, लूथरवादी, बैप्टिस्ट आदि।

पूंजी संचयन इसका आशय संसाधनों के संग्रहण से है और इसे उद्योग में पुनःनिवेश कर दिया जाता है ताकि उद्योग का विस्तार किया जा सके।

महानिष्क्रमण (exodus) धार्मिक अत्याचारों की वजह से यहूदी धर्मावलंबियों द्वारा पश्चिम एशिया से बाहर भाग जाने की प्रक्रिया को इस इकाई में महानिष्क्रमण कहा गया है।

औद्योगिक क्रांति इस शब्द का तात्पर्य 1750-1850 की अवधि में आर्थिक क्षेत्र में आने वाले आमूल परिवर्तनों से है। इंग्लैंड इस क्रांति का केंद्र था, इसके बाद यह संपूर्ण यूरोप में फेल गई। भाप शक्ति जैसी नई खोजों, पावरलूम, कलाई मशीन आदि जैसे आविष्कारों ने उत्पादन के क्षेत्र में क्रांति ला दी। इसी अवधि के दौरान कारखाना प्रणाली तथा पूंजीवाद का उदय हुआ।

सुधारवाद यह एक धार्मिक क्रांति थी जो सोलहवीं शताब्दी में पश्चिमी यूरोप में चर्च में फैले भ्रष्टाचार के विरूद्ध हुई। इसकी वजह से प्रोटेस्टेंट मत का जन्म हुआ जो कैथोलिक चर्च से अलग होकर बना था।

15.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आरों, रेमों, 1967. *मेन करंट्स इन सोसियोलॉजिकल थॉट.* वाल्यूम 2, पेंगुइन बुक्सः लंदन पृभठ 210-237

हरलम्बोस, एम., 1980. *सोशियोलॉजी थीम्स एण्ड पर्सपैक्टिव्स्.* ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेसः लंदन

कसलर, डर्क 1988. *एन इंट्रोडक्शन टु हिज़ लाइफ़ एण्ड वर्क,* फ़िलिप्पा हर्ड द्वारा अनुवादित. शिकागो युनीवर्सिटी प्रैसः शिकागो

15.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) धर्म से हमारा आशय अलौकिक या ऐसी घटनाओं के बारे में कुछ विचारों तथा विश्वासों से होता है जिनको स्पष्ट नहीं किया जा सकता। धर्म का संबंध मानव आचरण से संबंधित ऐसे कुछ मूल्यो, विचारों और दिशा-निर्देशों से होता है जो उसे स्वयं को तथा अपने इर्द-गिर्द की दुनिया को समझने में सहायता करते हैं।

ii) क) धर्म मनुष्य को अपने नियंत्रण से बाहर की घटनाओं के साथ मेल रखने में सहायता करता है।

ख) धर्म आचरण के कुछ ऐसे दिशा-निर्देश प्रदान करता है, जो उसके अनुयायियों को उनके कार्यकलापों में निर्देश देकर सहायता करते हैं।

iii) धार्मिक विश्वास ऐसे मूल्य प्रतिपादित करते हैं जिन पर चलने या डटे रहने की अनुयायियों से अपेक्षा की जाती है। इसलिए आर्थिक व्यवहार का रूप समाज की धार्मिक व्यवस्था द्वारा प्रतिपादित मूल्यों तथा निर्देशों द्वारा तय किया जाता है।

बोध प्रश्न 2

i) ग)

ii) ग)

iii) क)

iv)

परंपरावाद	पूंजीवाद
क)	ख)
घ)	ग)
	ड)
	च)

बोध प्रश्न 3

i) मैक्स वेबर ने देखा कि यूरोप में प्रोटेस्टेंट समुदाय ने ही आर्थिक क्षेत्र में सबसे ज़्यादा उन्नति की है। वे उद्योग, शिक्षा तथा नौकरशाही में अग्रणी थे। वेबर ने यह देखने का प्रयत्न किया कि उनकी उन्नति में कहीं उनके धर्म का तो योगदान नहीं था। इसीलिए वेबर ने प्रोटेस्टेंट नैतिकता तथा पूंजीवाद की प्रवृत्ति के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास किया।

ii) कल्विन सिद्धांतों का यह कहना है कि यह व्यक्ति की नियति में होता है कि व स्वर्गवासी होगा या नरकवासी। कल्विन धर्म के अनुयायियों ने यह सिद्ध करने की कोशिश की कि वे ही पृथ्वी पर समृद्ध बनने के द्वारा स्वर्ग के लिए चुने गए व्यक्ति हैं। समृद्धि प्राप्त करने का एकमात्र उपाय कड़ी मेहनत तथा बचत करना है। इसीलिए उन्होंने कड़ी मेहनत और अनुशासन पर बल दिया

iii) कल्विनवादी कार्य को ईश्वरीय आहवान या एक मिशन मानते थे। कार्य पूर्ण निष्ठा तथा ईमानदारी से किया जाना चाहिए। कार्य के साथ "अन्तर्भूत पारिश्रमिक" होता है, कर्त्तव्य को कर्त्तव्य के लिए करना चाहिए। कार्य ही उपासना है अतः कोई भी काम छोटा या गंदा नहीं होता।

बोध प्रश्न 4

i) ख)

ii) ख)

iii) ख